प्रमोद कुमार चमोली

प्रधानाध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुथ्या
संकुल संसाधन केन्द्र बुगाला, नरेन्द्र नगर
टिहरी गढ़वाल

चुनौतियों को अवसर की तरह देखना

सहायक अध्यापक – संजय सिंह
सी.आर.सी.सी. – बीरेन्द्र रयाल
भोजन माता – लक्ष्मी देवी
नामांकन – 20

कोई बताएगा तो आप सुन तो सकेंगे लेकिन सिर्फ सुन सकेंगे। कोई तस्वीर दिखायेगा तो सिर्फ कोई ठहरी हुई एक स्थिति देख सकेंगे। हां, वीडियो भी देखकर कुछ हद तक भले ही आप उसके कुछ करीब पहुंच सकें लेकिन ठीक–ठीक जानने के लिए करीब जाना पड़ेगा, हाथ से छूकर महसूस करना होगा। उत्तराखण्ड के टिहरी जिले में एक स्कूल है राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुथ्या। उसके बारे में जब भी सुनती वहां जाने की इच्छा बढती जाती। हालांकि उस स्कूल तक पहुंचने के रास्ते के बारे में सुनती तो हिम्मत थोड़ी डोलने भी लगती। आखिर एक रोज निकल ही पडे हम कुथ्या स्कूल के लिए।

उन पहाड़ी रास्तों पे चलते हुए जिन्दगी महसूस होना शुरू होता है। जिन्दगी कहती है, 'मुझसे मिलना है तो पिछला उतारकर आओ, मोबाईल का नेटवर्क पहचानने से इंकार कर देता है...जिन्दगी बाहें पसारती है।' साथी संजय सेमवाल के साथ मुश्किल रास्ते उतने मुश्किल भी नहीं लगते। वो लगातार हौसला भी बढ़ाते रहते हैं, और अति उत्साह पर लगाम भी कसते जाते हैं।

कुथ्या उस इलाके में सबसे ऊंची पहाड़ी पर बसा गांव है। रास्ते में कई

गांव मिलते हैं। कई बार लगता है कि रास्ता है कि इसके आगे ही नहीं... लेकिन पत्थरों के बीच से रास्ता झांकता नजर आता है। हर पत्थर कहता है 'पैर जमाकर रखना, फिर न कहना कि गिरा दिया मैंने...' हर कदम सधा हुआ...संतुलित। रास्ते में ठाट, मझला कुथ्या, सल्याल और लोर गांव पड़ते हैं। आठ–दस घरों वाले गांव। घरों में रह गए इक्के–दुक्के लोगों वाले गांव। जिनके पास साधन नहीं थे, पैसे नहीं थे, वो ही रह गए यहां बाकी सब शहरों की ओर चले गए। पहाड़ खूबसूरत हैं। पहाड़ के लोग प्यारे हैं लेकिन इनके हिस्से में जो जीवन है उस जीवन की कठिनाइयों पर कई सवाल हैं। वो सवाल जिन पर शहरी चमक–दमक में व्यस्त लोगों की नजर न गयी है, और शायद न जायेगी...वो सवाल अनुत्तरित रह गए शायद इसलिए ही पहाड़ खाली होते गए...

रास्ते में माल्टा और मौसमी से लदे पेड़ मिलते हैं। घर कुछ इस तरह के बने हैं कि नीचे उनमें जानवर रहते हैं और ऊपर घर के लोग। सीढ़ीनुमा खेत आकर्षक लगते हैं। हर घर के सामने से गुजरते हुए लोग बातचीत करते हैं। पानी और चाय पूछते हैं, चाय पीने और सुस्ता लेने का आग्रह करते हैं। बच्चे हाथ हिलाकर अभिवादन करते हैं। रास्ते में पानी के गदेरे मिलते हैं। गदेरे यानी पानी के छोटे–छोटे स्रोत। एक जगह एक पक्की

जगह में पानी इकठ्ठा भी हो रहा था पहाड़ों में इसे नौला कहते हैं। इस तरह इकठ्ठा किया हुआ पानी खेती और जरूरी कामों में इस्तेमाल होता है, जैसे खेतों को सींचना, जानवरों को पिलाना, नहलाना आदि।

यह सब देखते हुए हम कुथ्या गांव की तरफ बढ़ते जा रहे थे। कुथ्या स्कूल के अध्यापक प्रमोद जी ने गांव वालों को बता रखा था कि स्कूल में मेहमान आने वाले हैं। रास्ते में हमें जो मिलता, बिना पूछे ही हमें रास्ता बताता। चाय के तमाम आग्रहों को विनम्रतापूर्वक मना करने के बावजूद आखिर हम रघुवीर सिंह जी के घर रुक ही गये। हाथ से अनाज पीसने वाली चक्की बड़े दिन बाद देखी। पास में हीटर पे चाय बनती रही। बातचीत होने लगी नोटबंदी से लेकर पहाड़ों से होने वाले पलायन तक।

पहाड़ों से हो रहे पलायन पर विस्तार से बात हुई और जंगलों के लगातार कटने से होने वाले नुकसान की भी। खेती करना अब पहाड़ों पे मुश्किल हो गया है। रही–सही कसर बंदर और भालू पूरी कर देते हैं। पूरी फसल उजाड़ के रख देते हैं। उस परिवार के साथ वक्त बिताकर हम आगे के सफर पे चल पड़े। हमारे साथ जोत सिंह चौहान जी भी चल पड़े। मैं ज्यादा ही उत्साह में थी, खुश होकर मैंने संजय जी से कहा, शायद पहाड़ों से मेरी दोस्ती होने लगी है, क्योंकि इस बार मुझे ज्यादा दिक्कत नहीं हुई... संजय जी अनुभवी हैं, वो पहाड़ों की रग–रग से वाकिफ हैं और मेरी खस्ता हालात से भी। उन्होंने हंसकर कहा, 'जल्दबाजी कर रही हैं आप अभी अपने बारे में बयान देने में।' मैं चुप हो जाती हूं।

सचमुच, असल सफर तो अब शुरू हुआ था। पिछली थकान और सामने खड़ी चढ़ाई। दस कदम चलते ही सांस किसी धौंकनी सी चलती है।

संजय जी हंसते हुए कहते हैं, 'अरे अभी से...' मैं पसर जाती हूं। सांस को सम्भलने का मौका देती हूं, फिर चल पड़ती हूं लेकिन इस बार शायद पन्द्रह कदम या शायद बीस...फिर एक पत्थर पर टिककर पानी पीती हूं। संजय जी हौसला बढ़ाते हैं...बस जरा सा ही तो है, वो रहा स्कूल। मैं अब 'बस जरा सा तो है' के झांसे में नहीं आती...जब कोई पहाड़ी व्यक्ति बोले कि बस यहीं तो है तो जाने कितने किलोमीटर निकल आएगा आप समझ भी नहीं पायेंगे। उनकी आदत के मुताबिक वो जरा सा होता है और हमारी हालत के मुताबिक न खत्म होने वाला सफर बनने लगता है।

बहरहाल, चलना तो था, सो चल रहे थे...थोड़ी सी दूरी तय करती फिर बैठ जाती, फिर सांसे बटोरती जो बिखरने लगी थीं और फिर चल पड़ती... आखिर हम स्कूल पहुंच ही गए...

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुथ्या, इंग्लिश मीडियम

रास्ते जितने ही दुश्वार होते हैं मंजिलें उतनी ही लुभावनी लगती हैं। स्कूल पहुंचते ही सफर की सारी थकान फुर्र हो गयी हो...एकदम साफ सुथरा, चमचमाता स्कूल। पहला परिचय तो स्कूल की दीवारों से ही होता है, जो अपनी सार्थकता को बयां कर रही थीं। यह अंग्रेजी माध्यम का स्कूल है। कुछ चुनिन्दा सरकारी स्कूलों को ही अंग्रेजी मीडियम स्कूल का दर्जा दिया गया है जिनके शिक्षकों ने विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है। प्राथमिक विद्यालय कुथ्या के प्रधानाध्यापक प्रमोद चमोली ने वो विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है। स्कूल पहुंचते ही एक स्मार्ट सा बैनर दिखाई देता है जिसमें लिखा है खुद से ये पांच बातें जरूर बोलो। स्पीक फाइव लाइंस टू योरसेल्फ एवरीडे। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की ये पांच बातें बच्चे रोज बोलते हैं अंग्रेजी में भी हिंदी में भी।

1. आई एम द बेस्ट
2. आई कैन डू इट
3. गॉड़ इस आलवेज विद मी
4. आई एम विनर

5. टुडे इज माई डे

टुडे इज माई डे...के साथ मैं स्कूल के अंदर जाती हूं। यह स्कूल बहुत पुराना नहीं है। प्रमोद चमोली यहां पहले नियुक्त शिक्षक हैं और यह उनकी पहली पोस्टिंग भी है। उनकी नियुक्ति यहां 2013 में हुए थी। यह विद्यालय 2011 में खुला था और तब से लेकर प्रमोद जी की नियुक्ति तक व्यवस्था पर चल रहा था। प्रमोद रायवाला, ऋषिकेश के रहने वाले हैं। मैंने उनसे सपाट सवाल किया, 'इतने दुर्गम स्कूल में जब आपको पहली पोस्टिंग मिली तो आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या थी?' प्रमोद ने बिना जरा भी देर लगाये कहा, 'मुझे लगा कि मुझे एक सुंदर अवसर मिला है, कुछ कर पाने का।' उन्होंने उत्साह के साथ स्कूल ज्वाइन किया और स्कूल को बेहतर बनाने की कवायद शुरू की।

रणनीति स्कूल को अपना बनाने की

प्रमोद के पास एक रणनीति थी, जिसके हिसाब से उन्हें कुछ काम करने थे।

1. उन्होंने तय किया कि सबसे पहले स्कूल का भौतिक पक्ष दुरुस्त करना होगा ताकि समुदाय को और बच्चों को स्कूल आने को आकर्षित किया जा सके।
2. दूसरी रणनीति उनकी यह थी कि समुदाय को साथ लेकर चलना है।
3. स्कूल को साधन सम्पन्न बनाने हेतु मदद का इंतजार करने की बजाय तुरंत कुछ करने का प्रयास करना होगा।
4. स्कूल का अकादमिक पक्ष मजबूत करना होगा।
5. न सिर्फ अकादमिक बल्कि सांस्कृतिक व खेल कूद के पक्ष भी मजबूत करने होंगे।

क्योंकि दीवारें कुछ बोलती हैं

प्रमोद जब कुथ्या स्कूल में नियुक्त होकर आये तो यहां बिल्डिंग की स्थिति

खस्ताहाल थी। प्रमोद ने सबसे पहला काम किया स्कूल की पुताई करवाने का। उन्होंने खुद भी कुछ दीवारों की पुताई की। प्रमोद व्यक्तिगत तौर पर कुछ प्रतिभाओं के धनी हैं, जैसे कला, संगीत, खेलकूद और लेखन आदि। उन्होंने दीवारों को रंगों से सजाना शुरू किया। दीवारें मुस्कुराने लगीं। स्कूल में पानी की दिक्कत थी तो उन्होंने अपना जुगाड़ भिडाकर किसी तरह स्कूल में पानी की व्यवस्था की ताकि भोजन माता को नीचे से पानी लाने के कष्ट से मुक्ति मिले। बच्चों के लिए स्कूल में पानी हो। उन्होंने कहा कि 'मुझे बहुत बुरा लगता था। जब बच्चे जमीन पर बैठते थे, यहां तो ठंड भी बहुत होती है। ऐसे में बहुत मुश्किल होती है।' उन्होंने अपनी पहली सैलरी का पूरा पैसा स्कूल में लगाया और स्कूल के लिए फर्नीचर की व्यवस्था की।

कोई अजनबी गांव में आये और अचानक इतना कुछ करने लगे तो शक तो होगा ही, हुआ भी। समुदाय के लोगों की नाक–भौं सिकुड़ने लगी। वे स्कूल को संवारते और सुबह आते तो स्कूल में तोड़–फोड़ मिलती। दीवारें गन्दी मिलतीं। वे बिना किसी से शिकायत किये फिर से काम पर लग जाते।

समुदाय से रिश्ते

पहले दिन से ही प्रमोद ने समुदाय से रिश्ते बनाने की कोशिश शुरू कर दी थी। वो दो बातें जानते थे कि समुदाय का भरोसा जल्दी हासिल नहीं होगा और बिना समुदाय का भरोसा हासिल किये सफर आसान भी नहीं होगा. कुथ्या स्कूल में आसपास के 4–5 गांवो के बच्चे पढने आते हैं। प्रमोद के सामने अगली चुनौती थी बच्चों को स्कूल लाना और इसमें एक बड़ी चुनौती थी स्कूल पहुंचने का रास्ता। असल में कोई रास्ता था ही नहीं।

जैसा पहाड़ो पर होता है अपनी–अपनी तरह से पत्थरों पर पांव रखते हुए पहुंच ही जाते हैं। लेकिन यह स्कूल है, छोटे छोटे बच्चे आते हैं यहां कुछ बेहतर रास्ता तो होना ही चाहिए।

उनकी लगातार कोशिशों से समुदाय का उन पर से अविश्वास कुछ हद तक पिघलने लगा था। अब वो गुरू जी की बात सुनने लगे थे। धीरे–धीरे लोग गुरूजी के साथ आकर खड़े होने लगे। 2013 से 2016 के दरम्यान समुदाय के रिश्ते एकदम बदल चुके हैं। जो समुदाय गुरूजी को शक की निगाहों से देखता था अब वो उन पर आंख मूंदकर भरोसा करता है।

रहना सबके बीच

इस भरोसे को जीतने के लिए प्रमोद ने एक बात समझ ली कि एलियन की तरह बाहर से आकर काम करके चले जाने से बात नहीं बनेगी। यहीं रहना होगा, सबके बीच, सबके सुख–दुःख का साझीदार बनके। उन्होंने कुथ्या से 5 किलोमीटर की दूरी पर मिंडाथ गांव में एक घर लिया। कमरा नहीं घर। इसके बारे में भी प्रमोद जी की राय कम महत्वपूर्ण नहीं। उन्होंने कहा, 'मुझे यहां दिन नहीं काटने हैं, जीना है। जियूंगा नहीं तो अपने काम का आनन्द कैसे लूंगा। इसलिए मैंने जो घर लिया है उसमें जरूरत की तमाम चीजें रखी हैं। यहां से जाकर फिल्म देखना, संगीत सुनना, अच्छा खाना बनाकर खाने की पूरी व्यवस्था है मेरे घर पर।' वही ऊर्जा मुझे अगले दिन जमके काम करने के लिए प्रेरित करती है।

बच्चे मन के सच्चे

बच्चों को और उनके परिवार के सदस्यों को अपने प्रति अपने बच्चों के प्रति सम्मान का भाव होना जरूरी है। इसके लिए प्रमोद ने बच्चों की यूनिफॉर्म

बनवाईं। पैंट, शर्ट, टाई, बैल्ट, मोजे, जूते सब स्कूल की तरफ से। इसके बाद स्पोर्ट्स ड्रेस भी बनी बच्चों की और सर्दियों की ड्रेस अलग से। उनके लिए आई कार्ड की व्यवस्था हुई। हर बच्चा स्कूल में टिप–टॉप होकर आता है। पैरेंट्स भी बच्चों को इस ढंग से स्कूल जाते देख खुश होते हैं।

इसका उनके सीखने की प्रक्रिया पर क्या प्रभाव पड़ता है, नहीं लेकिन उनके भीतर आत्मविश्वास जरूर आता है, वो खुद को किसी से कम नहीं समझते और उन्हें जो भी आता है या नहीं आता है उसके बारे में वो खुलकर बात कर पाते हैं।

स्कूल की चर्चा जब आसपास होने लगी तो काफी लोग स्कूल देखने आने लगे। जो लोग आते वो बच्चों से प्रभावित होते, स्कूल से प्रभावित होते और बच्चों की सुविधा के लिए कुछ न कुछ देकर जाते। स्कूल के तीनों कम्प्यूटर हो या ऑफिस का फर्नीचर या विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी) मीटिंग के लिए कुर्सियां सब इसी तरह जमा होता गया।

सीखना सिखाना

प्रमोद बच्चों के सीखने की प्रक्रियाओं के लिए सबसे पहले सकारात्मक माहौल बनाते हैं। पहली जरुरत के तौर पर इन्होने बच्चों का खुलापन और कक्षा का दोस्ताना वातावरण माना। वे बच्चों के मित्र हैं, अक्सर उनके ही बीच बैठे नजर आते हैं और बोर्ड पर बच्चे नजर आते हैं। बच्चे अपने घर परिवार से लेकर तमाम बातें, संशय प्रमोद जी से साझा करते हैं। भयमुक्त, दोस्ताना माहौल नजर आता है। यही बच्चों के सीखने की तैयारी है। रोजमर्रा की बातचीत से ही किताबों को पाठ को जोडकर वो बच्चों से बातचीत करते

> प्रमोद जी का काम बहुत अच्छा है। उनकी यह पहली नियुक्ति है और उनका उत्साह देखते ही बनता है। इतने दुर्गम क्षेत्र के विद्यालय में उनके प्रयासों से स्कूल बहुत अच्छा हो गया है। खासकर उनका समुदाय के साथ जो जुडाव है वो कमाल का है।
>
> *– पंकज उप्रेती*
> *(उप शिक्षा अधिकारी)*

हैं। कक्षा एक, दो और तीन के बच्चों को वो एक साथ बैठाते हैं। इससे साथियों से सीखने का माहौल बनता, बच्चों को उत्साहित करते हैं जिसकी बकायदा व्यवस्था भी है। दीवार पर बड़े–बड़े चार्ट बने हैं, जिन पर हर बच्चे का नाम दर्ज है। उसके आगे रोज सुंदर से स्टार दिए जाते हैं। ये स्टार बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए हैं।

बच्चों को गीत और हाव–भाव से मात्राएं, नम्बर आदि सिखाते हैं। इसके लिए प्रमोद इंटरनेट की मदद भी लेते हैं और विविध गतिविधियों के आधार पर बच्चों को सिखाने का प्रयास करते हैं। गतिविधियों के लिए वो गूगल सर्च की मदद भी लेते हैं और नयी नयी गतिविधियों की तलाश करते रहते हैं। उनका स्मार्टफोन भी बच्चों के सीखने में सहायक होता है। प्रमोद चाहते हैं कि उनके बच्चों को शहर के स्कूल में न पढने का कोई मलाल न रहे। बच्चों को अंग्रेजी बोलने के लिए अंग्रेजी का माहौल बनाते हैं और गलती करने पर टोकते नहीं हैं। इससे बच्चे आत्मविश्वास से बात करते हैं। स्कूल में बच्चे अंग्रेजी में बातचीत करते हैं। कक्षा चार और पांच के बच्चे एक साथ बैठते हैं। उनकी क्लास में तीन कम्प्यूटर हैं। बच्चे कम्प्यूटर को खुद भी चलाना जानते हैं। प्रमोद का कहना है कि बच्चों से उनके घर परिवार से जोडकर अगर पाठ की बात करते हैं तो वो जल्दी समझते हैं। अगर कोई कहानी है तो उसके

> प्रमोद जी के आने से हमारे बच्चे अच्छा सीख रहे हैं। हमारे बच्चे भी अंग्रेजी बोलते हैं, टाई पहनते हैं और छुट्टियों में उनके कैम्प लगते हैं उसमें सीखते हैं। पहले ऐसा नहीं होता था।
>
> *– जोत सिंह चौहान (निवासी कुथ्या)*
>
> प्रमोद जी बहुत ही अपनत्व की भावना के साथ स्कूल में काम करते हैं। वहीं घर लेकर रहते हैं, स्कूल में काफी देर तक काम करते हैं। बच्चे किस तरह से अच्छे से अच्छे ढंग से सीख सकें इसकी चिंता उन्हें हमेशा रहती है।
>
> *– बीरेन्द्र रयाल (सी.आर.सी.)*

पात्र क्लास के बच्चों के नाम पर बना दिए जाते हैं, या सवाल है तो वो भी आसपास से जोडकर समझाने की कोशिश करते हैं। विज्ञान हो या सामाजिक विज्ञान प्रमोद कोशिश करते हैं कि किताबों को बच्चो के परिवेश से जोड़कर ही उसे पढ़ायें।

लाइब्रेरी

स्कूल में एक लाइब्रेरी है जो किसी अलमारी में बंद नहीं है। वो बच्चों की पहुंच में है और बच्चे ही उसकी देखभाल करते हैं। किताबें साफ सुथरी हैं और बच्चों से उनकी दोस्ती हो चुकी है। लाइब्रेरी को सहायक सामग्री के तौर पर भी शिक्षक इस्तेमाल करते हैं।

बाल शोध मेले व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिन की शुरुआत अगर अच्छी हो तो उत्साह बना रहता है। स्कूल में होने वाली प्रातः सभा और बालसभा भी कुछ विशेष होती है। स्कूल में वाद्ययंत्रों की मौजूदगी बालसभा को संगीतमय बनाती है। बैंड, स्पीकर, माइक, कैसियो (जिसे बच्चे खुद बजाते हैं) के इस्तेमाल से बाल सभा संगीतमय हो जाती है। प्रार्थना, बाल गीत आदि में अलग ही रंग भर चुके हैं। न सिर्फ प्रातः सभा या बाल सभा बल्कि स्कूल में बीच–बीच में सांस्क्रतिक कार्यक्रम भी होते रहते हैं। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गांव के सभी लोगों का प्रतिभाग होता है, सामूहिक भोज होता है। इन कार्यक्रमों की खुशबू ने समूचे इलाके को एक डोर में बांध दिया है।

समर कैम्प व पत्रिका प्रकाशन

गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के लिए यहां समर कैम्प का आयोजन किया जाता है जहां बच्चे खूब मजे भी करते हैं और तमाम नयी–नयी चीजें

सीखते हैं। गांववालों को इस बात का बहुत सुख है कि उनके बच्चे अंग्रेजी में बात करते हैं। गर्मी की छुट्टियों में भी सीखते हैं। उनका गुरु जी पर अब विश्वास बन चुका है। यहां स्कूल की एक पत्रिका का भी प्रकाशन हुआ है, जिसमें समुदाय और बच्चों की भागीदारी दिखती है। प्रमोद जी के प्रयासों के चलते विभागीय सहयोग भी समय–समय पर मिलता रहता है।

प्रमोद चुनौतियों को अवसर की तरह देखते हैं और उनसे जूझने का सुख लेते हैं।

(प्रमोद कुमार चमोली से हुई प्रतिभा कटियार की बातचीत पर आधारित)